Dr. DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

THEORIES OF THINKING

(चिंतन के सिद्धांत)

इस बात से लगभग सभी मनोवैज्ञानिक सहमत है कि चिंतन की क्रिया किसी समस्या के साथ शुरू होती है और उस समस्या के समाधान के साथ ही समाप्त हो जाती है। लेकिन समस्या के उत्तपन होने और उसके समाधान के बिच होने वाली मध्यवर्ती प्रतिक्रियाओं के संबंध में मनोवैज्ञानिकों के बीच विवाद रहा है। इस सम्बन्ध में दो प्रकार के सिद्धांत है, जिन्हें केन्द्रीय सिद्धांत तथा केन्द्रीय-परीधीय सिद्धांत कहते हैं।

केन्द्रीय-सिद्धांत

(CENTRAL THEORY)

यह सिद्धांत मस्तिष्क और विशेष रूप से कॉर्टेक्स को चिंतन का आधार मानता है। इसके अनुसार कॉर्टेक्स की क्रियाओं से ही समस्या का समाधान सम्भव होता है। यह सिद्धांत चिंतन

में अन्य शारीरिक क्रियाओं को स्वीकार नहीं करता है। इसी आधार पर इसे केन्द्रीय सिद्धांत कहा जाता है।

इस सिद्धांत के अनुसार किसी उद्दीपन से ग्राहक के उत्तेजित होने पर स्नायु-प्रवाह उत्तपन होता है, जो संवेदी स्नायु द्वारा कॉर्टेक्स में जाता है। कॉर्टेक्स में स्नायु-प्रवाह के पहुचने पर आन्तरिक क्रियाएँ उत्तपन होती है। कॉर्टेक्स का साहचर्य खण्ड सक्रिय बन जाता है । भिन्न - भिन्न प्रकार के विचार तथा प्रतिमाएं प्रकट होने लगते हैं । संप्रत्यय तथा प्रतीक के सहारे विचारों एवं प्रतिमाओं को संगठित करने की क्रिया जारी हो जाती है । इसी क्रम में प्राणी को समस्या का कोई समाधान सूझ जाता है और वह मानसिक स्तर पर ही किसी विशेष व्यवहार के लिए तत्पर हो जाता है ।इससे क्रियात्मक स्नायु-प्रवाह उत्पन्न होकर कर्मेन्द्रिय में जाता है, जिससे प्रतिक्रिया उतपन्न होती है । इस प्रकार, केन्द्रीय सिद्धांत के अनुसार समस्या तथा इसके समाधान के बीच होने वाली क्रिया मस्तिष्क के भीतर ही होती है ।

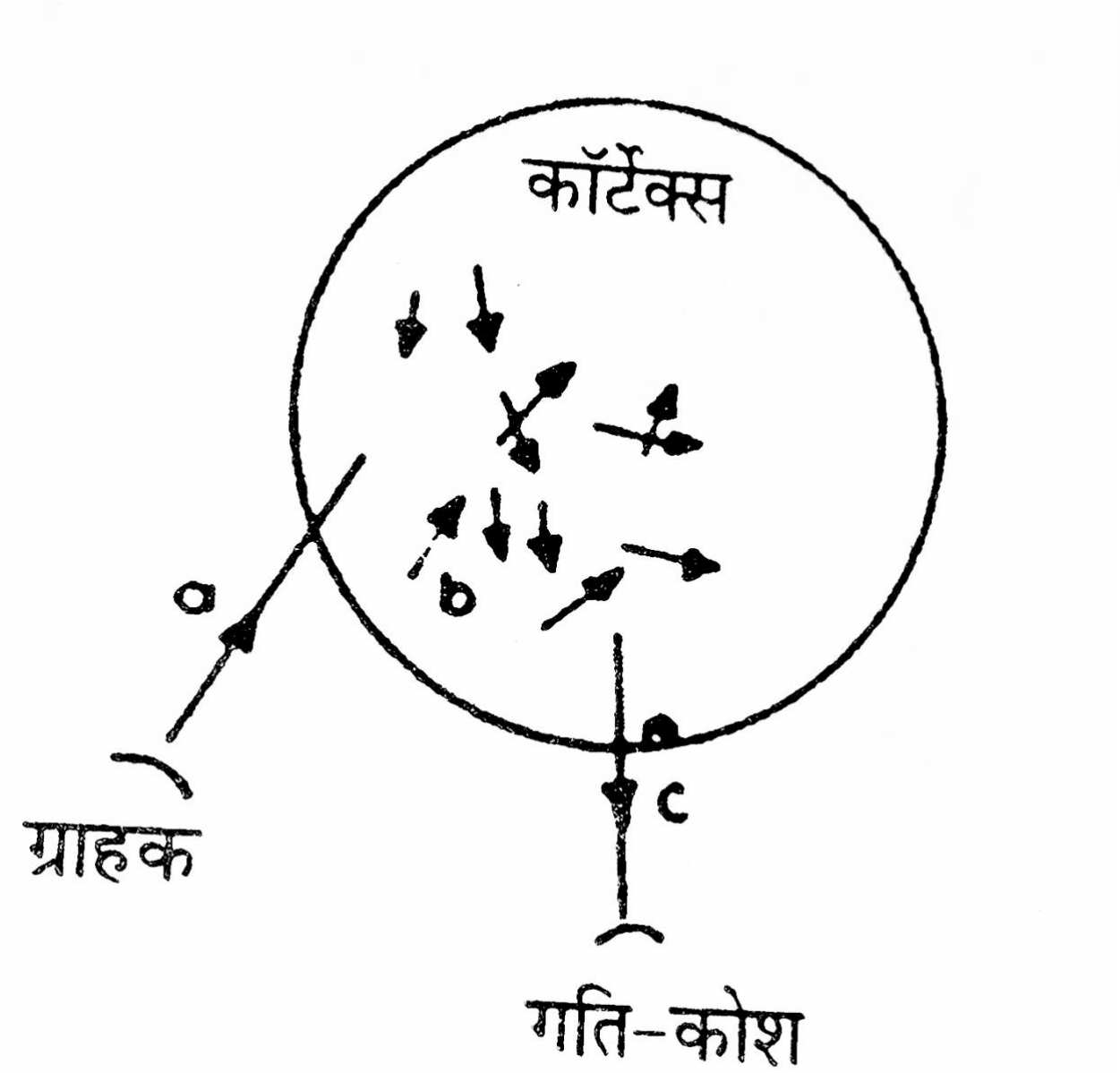

चिंतन के केन्द्रीय सिद्धांत का विकास संरचनावाद तथा गेस्टाल्ट मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि में हुआ। संरचनावादी मनोवैज्ञानिकों ने अन्तर्निरक्षण की सहायता से यह प्रमाणित करना चाहा कि चिंतन वास्तव में एक केन्द्रीय मामला है। इसी तरह गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों ने भी चिंतन को केन्द्रीय कार्य माना और समस्या समाधान में केवल सूझ के महत्व पर बल दिया।

गुण :- चिंतन या समस्या समाधान के केन्द्रीय सिद्धांत का कुछ गुण इस प्रकार है-

1. चिंतन के सिद्धांत के रूप में केन्द्रीय सिद्धांत को अग्रता प्राप्त है। चिंतन का यह प्रथम सिद्धांत है, जिसका उद्भव संरचनावाद तथा गेस्टाल्टवाद की प्रीस्ट भूमी में हुआ।
2. इस सिद्धांत से प्रभावित होकर परिधीय सिद्धांत का विकास हुआ।
3. अमूर्त चिंतन की व्याख्या करने में यह सिद्धांत अधिक सफल है। विनाके के अनुसार अमूर्त चिंतन की व्याख्या करने में यह सिद्धांत परिधीय सिद्धांत की अपेक्षा अधिक सक्षम है।
4. यह सिद्धांत केन्द्रीय संरचना को चिंतन का आधार मानता है, जो बहुत अंशो में सही प्रतीत होता है।
5. इस सिद्धांत से इस बात की व्याख्या हो जाती है कि भाषा के आभाव में चिंतन कैसे संभव होता है। डिकसन ने कहा है कि मानव चिंतन की व्याख्या करने में यह सिद्धांत अधिक सफल है तथा सक्षम भी।

केन्द्रीय-सिद्धांत मे कई गुणों के होते हुए भी चिंतन की स्वरूप की समुचित व्यवस्था इसके द्वारा संभव नहीं है। क्योंकि इसमे कई तरह के दोष भी पाए गये हैं जो निम्न हैं:-

1. इस सिद्धांत का एक दोष यह है कि चिंतन में यह पेशीय क्रियाओं के महत्व को स्वीकार नहीं करता है।
2. इस सिद्धांत के अनुसार चिंतन के लिए भाषा आवश्यक नहीं है परन्तु अनेक अध्ययनों से पता चलता है कि भाषा की उपस्थिति में चिंतन की क्रिया सरल बन जाता है।
3. केन्द्रीय सिद्धांत का प्रयोगात्मक आधार बहुत कमजोर है।
4. केन्द्रीय सिद्धांत के आधार पर मूर्त चिंतन की व्याख्या काफी कठिन है। विनाके के अनुसार यह सिद्धांत अमूर्त चिंतन की व्याख्या करने में जितना सफल है, उतना मूर्त चिंतन की व्याख्या करने में सफल नहीं है।

इन त्रुटियों के होते हुए भी हम इस सिद्धांत को अस्वीकार नहीं कर सकते है। हमारे पास कोई ऐसा ठोस प्रमाण नहीं है कि हम इस सिद्धांत की अभिधारणाओं को गलत सिद्ध कर सके। अतः इसे एक सम्पूरक सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।